International Journal of Education and Science Research
Review P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

मोहन राकेश कृत ''आषाढ़ का एक दिन'' में चरित्रों को पृष्ठभूमि का मूल्यांकन

Omprakash Suthar
Research Scholar
JJT University, Rajasthan

Dr.Shakti Dan Charan
Supervisor
JJT University, Rajasthan

सार–
मोहन राकेश बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। उनके बाहर–भीतर चलते रहे तनाव ने समयोचित रूप से उन्हें कुछ करने का मौका न दिया। राकेश की मानसिकता उनके नाटकों के कालिदास, नन्द और महन्द्रनाथ में भी स्पष्ट उभरकर आई। संक्षेप में कहें तो हिन्दी नाटक और रंगमंच को एक सही तथा सार्थक पहचान देने की दिशा में मोहन राकेश का स्थान हिन्दी नाटककारों में अग्रगण्य है। उन्होंने अपनी मौलिक दृष्टि, भावपूर्ण संवेदना तथा जीवन के अनुभव–वैविध्य के आधार पर हिन्दी नाटक को कथ्य एवं शिल्प पर परंपरागत दृष्टिकोण से मुक्त कर विकास के नये आयामों से परिचित कराया।

मोहन राकेश का जीवन परिचय

मोहन राकेश और उनके पात्रों पर उनके अपने जीवन का प्रभाव देखा जा सकता है। उन्होंने 8 जनवरी 1925 को अमृतसर के एक बुद्धिजीवी परिवार में जन्म लिया था वकील पिता के असमय देहांत के बाद परिवार की देखभाल करने का बोझ राकेश के कन्धों पर आ गया माँ की अथक सहायता के कारण वे लाहौर विश्वविद्यालय से हिंदी और अंग्रेजी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। भारत के विभाजन के समय अपने शहर लाहौर छोड़ने तथा बहन की असमय मृत्यु का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भारत के विभिन्न शहरों में अपना जीवन बिताया जैसे दिल्ली, पंजाब के अमृतसर, जालंधर, पठानकोट और हिमांचल प्रदेश के कुल्लू, मनाली, और मुंबई में। इस दौरान उन्होंने हिंदी के अध्यापक का कार्य भी किया, लेकिन लगातार अपनी रचनाओं के पारिश्रमिक से जीवनयापन का प्रयत्न करते रहे। उन्होंने तीन विवाह किये थे। पहली पत्नी शीला से एक पुत्र नवनीत का जन्म हुआ लेकिन 1957 में तलाक के बाद माँ उसे अपने साथ ले गयी। कुछ अंतराल के बाद उन्होंने पुष्पा के साथ दूसरी शादी की लेकिन यह विवाह मूल रूप से परिवार की अपेक्षा और मित्रों की प्रेरणा से हुआ था, और ज्यादा देर तक नहीं टिक पाया। कुछ सालों बाद जब उनकी आयु लगभग 40 वर्ष की थी एक युवती अनिता से उनकी भेंट हुई और उन्होंने गान्धर्व विवाह कर लिया। मोहन राकेश के लिए लेखन और दोस्तों का दायरा पहली जरूरत थे। पारिवार को वे दूसरे स्थान पर रखते थे। उनकी सामाजिक तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि के विषय में उनकी ''आत्मकथा परिवेश'' के संस्मरण, टिप्पणियों और उनकी रचनाओं से जाना जा सकता है।

मोहन राकेश के चरित्रों की पृष्ठभूमि

मोहन राकेश जी का जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ लेकिन उन्हें आर्थिक संकटों से भी गुजरना पड़ा, इस कारण वे निम्न या निम्नमध्यम वर्ग की समस्याओं के प्रति अधिक सचेत रहे। अपने जीवन काल में प्रकाशित चौवन कहानियों में उन्होंने सामाजिक विषमता का प्रदर्शन कम ही किया है। शायद ही कोई कहानी सामाजिक अंतर दिखाने के लिए लिखी गयी हो। केवल लेखक के मध्यमवर्गीय होने के नाते ही उनके साहित्य को मध्यमवर्गीय पुकारना ठीक नहीं, न ही उनके पाठक समुदाय के नाते जो अधिकतर मध्यमवर्ग का ही है। विषय चयन के आधार पर इसे मध्यमवर्गीय कहा जा सकता हैं क्यों कि कथानक के विषय ऐसे हैं जिन पर किसी अमध्यमवर्गीय लेखक की दृष्टि शायद ही पड़े। मोहन राकेश स्त्री चरित्रों में बहुत विविधता है। उनके लेखन में स्थिर वास्तओं के मनोहर वर्णन मिलते हैं, उनका प्रकाश तथा ध्वनि का प्रयोग दिलचस्प है। इसी प्रकार उनकी कथन–तकनोक की भी अपनी अलग विशेषता है। प्रायः अन्य परुष में दिए जा रहे कथन के बावजूद ऐसा लगता है जैसे हम संसार को किसी पात्र की आँखों से ही देखते हों। उनके द्वारा रचे गए अकेले व्यक्ति की कुंठा तथा शहरी या ग्रामीण परिवेश का निरूपण भी अपने आप में विशेष है।

प्रस्तावना

स्वातंर्त्योत्तर हिन्दी नाटक की श्रृंखला में 'आषाढ़ का एक दिन' एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उल्लेखनीय है। यह राकेश का सर्वप्रथम बहुचर्चित तथा लोकप्रिय नाटक है। इसमें कवि कालिदास को एक प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। 'आषाढ़ का एक दिन' में ऐतिहासिक पात्रों के साथ काल्पनिक पात्र भी है। राकेश ने इतिहास और कल्पना के सामंजस्य

से प्राचीन और अर्वाचीन तथ्यों को समन्वित करके शाश्वत सत्य को युगानुरूप पुष्ट किया है। मोहन राकेश के नाटक के अध्ययन हमें यह निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं कि पारिवारिक, वातावरण, शिक्षा, दीक्षा तथा अनुप्रासंगिक क्रिया–कलापों के एकीकृत रूप स नाटककार मोहन राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व का निर्माण हुआ। यद्यपि राकेश की पकड़ नाटक के साथ कहानी, उपन्यास जैसी साहित्यिक विधाओं में भी थी तो भी इनकी ख्याति नाटककार के रूप में सचमुच अद्वितीय रही।

'आषाढ़ का एक दिन' हिन्दी नाट्य साहित्य के लिए राकेश से मिली महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह नाटक इतिहास तथा कल्पना के मणि कंचन योग से लिखी उच्चतर कृति है। राकेश ने इतिहास का आश्रय लेकर उसके काल्पनिक संदर्भों को नाटकीय रूप प्रदान कर दिया है। उन्होंने कहा है–'ऐतिहासिक नाटककार इतिहास की बत्ती में कल्पना का दिया जलाकर रसानुभूति का सुंदर प्रकाश फैला देता है। जिस प्रकार समस्त साहित्य का कार्य मानवता के विकास में योग देता है, उसी प्रकार उसके एक अंग ऐतिहासिक नाटक का कार्य मानव के अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान की आलोचना करना और भविष्य की रूपरेखा प्रस्तुत करना है।' उन्होंने अपने नाटकों क लिए सीमित ऐतिहासिक परिवेश को स्वीकार किया है। 'आषाढ़ का एक दिन' में इतिहास और कल्पना होने से इसे पूर्ण रूप में ऐतिहासिक या काल्पनिक नाटक कहना अनुचित है। इसे आधुनिक मानवीय भाव बोध से पूरित 'इतिहास संपन्न आधुनिक नाटक कहना समुचित है। नाटककार के शब्दों में–'साहित्य में इतिहास अपनी यथा तथ्य घटनाओं में व्यक्त नहीं होता, घटनाओं को जोड़ने वाली कल्पनाओं में व्यक्त होता है, जो अपने ही एक नये और अलग रूप में इतिहास का निर्माण करती है।' नाटककार इतिहास को लेकर अपने कल्पना के रंग में रंगकर प्रस्तुत करता ह। ऐसे नाटकों को ऐतिहासिक–काल्पनिक नाटक कहते हैं।
'आषाढ़ का एक दिन' में एक प्रत्यक्ष कथा की पृष्ठभूमि होने के समान इसकी एक अप्रत्यक्ष पृष्ठभूमि भी होती है। इस नाटक को प्रत्यक्ष कथा कवि कालिदास के जीवन से संबंधित कथा है। अप्रत्यक्ष पृष्ठभूमि सृजन प्रक्रिया की आजादी से संबंधित है। विश्वविख्यात कवि, भारत का वरदान कालिदास एक इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति है। यह कवि कुल गुरु कालिदास मोहन राकेश के लिए एक प्रतीक मात्र ही है। स्पष्ट कहें तो यहाँ के कालिदास आजादी के साथ सृजन प्रक्रिया में लीन आधुनिक रचनाकार ही है। वही कालिदास में राकेश ने अमानवीय गणों को नहीं डाला है।

मोहन राकेश के मत में कवि कालिदास का जन्म स्थान कश्मीर नहीं है। वह उज्जयिनी के उत्तर में संभव हो सकती है। राकेश इतिहास से एक पग आगे जाकर कहते है कि सुवर्णगिरि या उसका आसपास कालिदास का जन्मस्थान है। वह बहुत सुंदर और आकर्षक पर्वत श्रृंखला है। अपना निर्णय साफ करने के लिए कालिदास के द्वारा मल्लिका से कहते है–'कुमार संभव की पृष्ठभूमि यह हिमालय है और तपस्विनी उमा तुम भी हो। मेघदूत के यक्ष की पीड़ा मेरी पीड़ा है और विरह विमर्दितयक्षिणी तुम हो।' यहाँ हम यह भूलना नहीं चाहिए कि राकेश ने कवि कालिदास को गुप्त साम्राज्य का राज कवि स्वीकारा है। यह बात राजपुरुष दन्तुल से उन्होंने व्यक्त किया है।

इतिहास से सहारा लेने के लिए राकेश ने जैन विद्वान तुंगाचार्य से सहायता उठा ली है। उनके अनुसार राज दुहिताप्रियंगु मंजरी से कालिदास की विवाह की बात स्वीकार की है। कालिदास कश्मीर की पार्वत्य भूमि में जन्मे एक महान विश्व प्रसिद्ध कवि है। किंतु राकेश चित्रित कालिदास एक क्षेत्रीय कवि के सीमा से बाहर नहीं जाता। यह प्रादेशिक कवि को आचार्य वररुचि उज्जयिनी ले जाता है। वह वहाँ राज कवि के पद भार में आसीन हो जाता है। आगे उन्हें कश्मीर का शासक नियुक्त किया गयाा। यहाँ यह मालूम होता है कि राकेश का कालिदास उज्जयिनी में जन्मे और कुछ समय कश्मीर में बसे कवि हैं। अंत में कश्मीर से विरक्त कालिदास पुनः मल्लिका के पास लौटता है। लगता है कि राकेश इतिहास को सुधारने का दायित्व ले रहा है।

कालिदास का जीवनकाल प्रागैतिहासिक काल है। जन्म वर्ष, जन्म स्थान या शिक्षा–दीक्षा के बारे में उचित जानकारी अनुपलब्ध है। अतः कालिदास के बारे में एक निष्पक्ष निर्णय पर पहुंचना आसान नहीं है। लगता है कि राकेश ने कालिदास संबंधी प्राप्त खबरों से स्वार्जितकाल्पनिकता को मिलाकर 'आषाढ़ का एक दिन' का चयन किया है। कथा में इतिहास और कल्पना मिश्रित करने के समान कथापात्रों में भी दोनों प्रकार के प्रयोग किये हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' में वर्णित कालिदास, मल्लिका तथा प्रियंगुमंजरी को छोड़कर बाकी सभी पात्र काल्पनिक है। वैसे नाटक में घटित संदर्भों में अधिकांश भावना निर्मित है। इतिहास का जैसा चित्रण इतिहास ही रहेगा, उसे नाटक नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का आक्षेप है कि राकेश ने इतिहास को गलत रूप में चित्रित किया। ऐसे लोग यह न भूलें कि इतिहास और नाटक अलग–अलग चीज है।' प्रस्तुत नाटक में वर्तमान युग की समस्याओं को निरूपित करने के लिए ही कालिदास को चुना

है'। राकेश का यह मत आक्षेप दूर करने के लिए पर्याप्त है। राकेश ने कालिदास को एक व्यक्ति के रूप में न मानकर महान सृजन प्रतिभा के प्रतीक माना है। यह नाटक हमें इतिहास के द्वारा आधुनिक भाव जगत की ओर ले जाता है। यह है मोहन राकेश की रचना विशिष्टता। उनका नाटक बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध के जीवन तथा साहित्य का नमूना है। इसलिए राकेश आधुनिक नाटकों के मसीहा कहे गये हैं।

'आषाढ़ का एक दिन' हिंदी के युगान्तरकारी नाटककारों में से एक मोहन राकेश जी की एक कृति है। इस नाटक को हिंदी साहित्य में इसलिए जाना जाता है क्योंकि इस नाटक से हिंदी रंगमंच में यथार्थवाद की उस समय नयी परम्परा को एक बहुत मजबूत प्रोत्साहन मिला। पुस्तक के प्रारम्भ में ही मोहन राकेश जी ने कहा है कि हिंदी रंगमंच पाश्चात्य रंगमंच से अत्यधिक भिन्न है। हमारे पास उपलब्धियों को देखने के लिए पाश्चात्य रंगमंच ही है क्योंकि हिंदी रंगमंच किसी एक विचार विशेष से बंधा हुआ नहीं है। राकेश जी ने हिंदी रंगमंच के उद्देश्य को भी परिभाषित करने की कोशिश की है। उनका कहना है कि रंगमंच को हिंदी भाषी प्रदश की दैनिक आवश्यकताओं और उनकी सांस्कृतिक महत्ताओं को अभिव्यक्त करने वाला होना चाहिए और ऐसा पाश्चात्य रंगमंच की अंधाधुंध तरीके से नकल करने से संभव नहीं है। और लेखक की इस बात के लिए सराहना होनी चाहिए कि इस भाव की अभिव्यक्ति के लिए कालिदास को कथानक में सम्मिलित किया गया है, जो कि अपने आप में स्वयं बहुत बड़े नाटककार थे।

नाटक का कथानक कालिदास और उनकी बचपन की प्रेमिका मल्लिका के इर्द–गिर्द घूमता है। विलोम कालिदास का स्वघोषित मित्र है और कुछ आलोचनात्मक समीक्षाओं में उसे इस नाटक का खलनायक भी कहा जा सकता है लेकिन अगर उसे खलनायक कहकर छोड़ दिया जायेगा तो इस पात्र के विकास को कम करके आंकना होगा। विलोम को स्थान–स्थान पर उलाहना का भी सामना करना पड़ा है और समय.समय पर नायक के आदर्शवाद को दिखाने के लिए भी विलोम का प्रयोग किया गया है। ऐसा कहा जा सकता है कि इस नाटक में कालिदास आदर्शवाद के प्रतीक हैं और यथार्थवाद से उनकी कशमकश का बाकी पात्रों पर पड़ते हुए प्रभाव को राकेश जी ने बखूबी दर्शाया है। वहीं दूसरी ओर विलोम को यथार्थवाद का प्रतीक माना जा सकता है। उसकी बातें और उसके द्वारा उठाये गए कदम समाज की चलती हुई परिपाटी द्वारा प्रमाणित कदम माने जा सकते हैं और परिस्थितियों के आगे विवश होकर मल्लिका को भी अंत में यथार्थ के आगे नतमस्तक होना ही पड़ता है।

आपको यह लग सकता है कि इसके कुछ पात्र सर्वथा अनावश्यक थे। आपकी यह धारणा अनुस्वार ओर अनुनासिक द्वय के बारे में हो सकती है, संगिनी और रंगिणी के बारे में या निक्षेप के बारे में भी हो सकती है। यदि गंभीरता से सोचा जाये तो यह दिखाई पड़ेगा नाटक का हर एक पात्र राकेश जी ने बहुत सोच समझकर और अत्यन्त सटीक जगह पर रखा है। अनुस्वार और अनुनासिक की बौद्धिक क्षमता को एक वार्तालाप के द्वारा दर्शाया गया है और जब बाद में मल्लिका को उनमें से एक चुनने को कहा जाता है तो यह साफ दिखता है कि राजबल कभी सामान्य मनुष्य की भावना का सम्मान नहीं जानता। वह हर एक प्राणी को किसी बड़े ढांचे की सिर्फ एक इकाई के रूप में देख सकता है। संगिनी और रंगिणी वह सब देख पाने में असमर्थ थी जिसको देखने के लिए वह ग्राम्यप्रदेश में आई थी जबकि उन्हीं दृश्यों को देखकर कालिदास महाकवि बन गए थे। कभी कभी हम किसी चीज की कल्पना इस तरह से कर लेते हैं कि जब वह चीज साक्षात् प्रकट हो तो विश्वास करना ही मुश्किल ही जाता है। कुछ ऐसा ही संगिनी और रंगिणी के मल्लिका के साथ संवाद के द्वारा दिखाने की कोशिश की गई है।

अगर यह कहा जाये कि इस नाटक का नायक कालिदास न होकर मल्लिका थी तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस नाटक को हिंदी साहित्य के कुछ शुरुआती स्त्री–प्रधान रचनाओं में जगह दी जा सकती है। तृतीय अंक में कालिदास के संवाद, जहाँ उन्होंने अपने मानसिक द्वंद्व का चित्रण किया है, फिर भी कथानक की स्त्री प्रधानता को कम नहीं कर सके। मल्लिका का चित्रण एक स्वतंत्र, आत्म–निर्भर, विचारशील, आधुनिक और निर्णायक नारी के रूप में हुआ है। मल्लिका कहती भी है–'मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह सम्बन्ध और सब सम्बन्धों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है'। कालिदास को इतना अधिक चाहते हुए भी मल्लिका ने कभी भी अपने आप को कालिदास और उनकी उपलब्धियों के बीच में नहीं आने दिया। हालांकि मन में हमेशा एक शक्तिशाली इच्छा बनी रही जैसा की यहाँ देखा जा सकता है।

नाटक के संवाद बहुत शक्तिशाली बन पड़े हैं। मल्लिका की मां अम्बिका, जो कि चाहती है कि मल्लिका विवाह करके एक सुखी जीवन व्यतीत करे, कहीं न कहीं कालिदास से चिढ़ती भी है भले ही यह वैचारिक स्तर पर ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए जब कालिदास के पास राजकवि बनने का प्रस्ताव आता है और वो ना–नुकुर करते हैं तो वह कहती है. 'सम्मान प्राप्त होने पर सम्मान के प्रति प्रकट की गयी उदासोनता व्यक्ति के महत्व को बढ़ा देती है।
इस नाटक में इतिहास के पुनरुत्थानवादी काव्य की झलक कहीं से भी देखने को नहीं मिलती। मोहन राकेश जी ने अपने आपको कालिदास और मल्लिका के प्रसंग तक सीमित रखा है। अनावश्यक रूप से संस्कृति का गुणगान इस नाटक में देखने को नहीं मिलता है। कहानी के लिहाज से भी यह अत्यंत सीमित और सार–गर्भित रचना कही जायेगी। पातंजलि के एक उल्लेख के अलावा कहीं भी लेखक ने पात्रों के ज्ञान को दर्शाने के लिए संदर्भों का सहारा नहीं लिया जिससे पूरे नाटक में गति बनी रही है। भाषा अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ नहीं है, पढ़ने पर प्रवाह बना रहता है। इस नाटक के मंचन देश–विदेश में हुये हैं जिनमें से कुछ प्रसिद्ध लोगों द्वारा अभिनीत और निर्देशित मंचनों के दृश्य इस पुस्तक में दिए गए हैं। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद हिंदी नाट्य रचनाओं में अवश्य रूचि जागनी चाहिए।

निष्कर्ष–

मोहन राकेश की हिंदी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, उन्होंने प्रायः सभी विधाओं में रचनाओं का सृजन किया है नाटकों, उपन्यासों और अनेक कहानियों के साथ साथ उन्होंने यात्रावृत्तांत, निबंध भी लिखे थे तथा संस्कृत और अंग्रेजी से अनुवाद किया है, जैसे–मृच्छकटिक और अभिज्ञानशाकुन्तल का। राकेश जी का साहित्य सम्बन्ध समझना ज्यादा आसान है। उनके करीबी दोस्तों कमलेश्वर, मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव के साथ उन्होंने एक ऐसी शैली को प्रयोग में लाने की चेष्टा की जो उस समय तक भारतीय साहित्य की दुनिया में उपस्थित ही नहीं थी। जिसे बाद में नई कहानी के रूप में जाना गया। वे एकांत में नहीं रहते थे इसलिए उनके सन्देश और जीवन की घटनाओं में तालमेल है। नए आलोचक किसी रचनाकार की कृति को आँकने के लिये लेखक के जीवन एवं तत्वों पर विशेष ध्यान देते हैं परन्तु मोहन राकेश चाहते थे कि उनके पाठक उनके पात्रों में अपने चिंतन और अपनी चिंताओं से परिचित हों।

सदंर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मोहन राकेश का संचयन, पृ0 11
2. अपने दौर के महानायक कहलाए मोहन राकेश (प्रभासाक्षी), पृ0 34
3. नामवर सिंह 'नई पत्रिका' पृ0 9
4. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश, पृ0 43
5. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश, पृ0 56
6. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश, पृ0 79
7. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश, पृ0 15
8. आधे अधूरे – मोहन राकेश, पृ0 43
9. आधे अधूरे – मोहन राकेश, पृ0 89
10. आधे अधूरे – मोहन राकेश, पृ0 76
11. ओम शिवपुरी – नई कहानी के आंदोलन के स्तंभ मोहन राकेश (प्रभासाक्षी), पृ0 11
12. परिवेश, मोहन राकेश, 1967, भारतीय ज्ञानपीठ प्र0, वाराणसी।
13. साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि, मोहन राकेश, 1975।
14. नामवर सिंह 'नई पत्रिका' पृ0 9
15. अंधेरे बन्द कमरे, मोहन राकेश, 1991, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली–2
16. अपने दौर के महानायक कहलाए मोहन राकेश (प्रभासाक्षी), पृ0 34